॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मार्च 2018 वर्ष 21, अंक 3 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2074 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये | कुल पृष्ठ 20

टंकारा ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आने वाली जनगणना में अपनी भाषा संस्कृत लिखवायें- डॉ. रूप किशोर शास्त्री (गुरुकुल कांगड़ी)

डी.ए.वी. संस्कृत भाषा के उत्थान में पूर्ण सहयोग देगा- श्री जे.पी. शूर (निर्देशक डी.ए.वी. स्कूल्स)

मंचासीन श्री. सुनील मानकटला, श्री गिरिश खोसला, श्री लधा भाई पटेल, मुख्य अतिथि डॉ. जे.पी. शूर, अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल एवम् श्री अरूण अबरोल

दिनांक 07 फरवरी से 14 फरवरी 2018 का सम्पूर्ण ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 07 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। मुख्य यजमान श्री जे.पी. शूर, निदेशक, डी.ए.वी. स्कूल्स, श्री योगेश मुंजाल एवम् परिवार, श्री सुनील मानकटला, श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल आदि थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक एवं श्री दिनेश पथिक (अमृतसर) के मधुर भजन प्रातः एवं सायं होते रहे।

11 फरवरी 2018 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जिसमें भजन, कव्वाली, भाषण, लघु नाटिका इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री एम.के. दुआ ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्रीमती उषा अरोड़ा, श्री रमेश मेहता (पूर्व स्नातक) ने सबकी उपस्थिति में अपार जन समूह व ब्रह्मचारियों की सराहना की।

दिनांक 12 फरवरी 2018 से प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग एवं स्वास्थ्य सत्र स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) के नेतृत्व में चलाया गया, तदुपरान्त प्रातः 6 बजे से प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भारत भर के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

प्रातः 8 बजे वेदी से उद्घाटन समारोह किया गया जिसमें श्री राजीव

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कव्वाली प्रस्तुत करते गुरुकुल के ब्रह्मचारी

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आपके नेतृत्व एवम् आर्शीवाद से दिन-प्रतिदिन प्रगति के पथ पर

अपने आर्शीवादो को गिने

विश्व के प्रसिद्ध गीतकार हुए है विली नेलसन, जिन्होंने लिखा है कि **'जब मैंने अपने को प्राप्त आर्शीवादों की गिनती करनी आरम्भ की तो मेरा जीवन ही बदल गया।'**

मैंने जब इस वाक्य का मन्थन करना प्रारम्भ किया तो मैं इसकी गहराई में बहता गया। उस गीतकार के उपरोक्त वाक्य की सात्त्विकता को समझने लगा कि जब हम इस बात को समझनें लगेगें कि हमारे पास कितने ही ऐसे क्षण है जिनके लिए हम किसी न किसी के आभारी हैं। बस यही है वह समझ जिसे अपने अन्दर से खोज निकालना है कि आज तक हमने कभी इन आभारो/आर्शीवादो की गिनती ही नहीं की, इसका अभ्यास करना कितना ऊर्जावान है और इसका अभ्यास एक अद्‌भुत आनन्द दे जाता हैं।

जब आप अपने पर हुए आर्शीवादों को महसूस करने लगते हैं, चाहे वे कितने भी बड़े अथवा छोटे ही क्यों न हो आप महसूस करने लगेगें कि आभारों को समझने के उपरान्त आपके आर्शीवाद बढ़ने लगे और आप अपने आप में आत्मविश्वास की बड़ोतरी के भाव को समझने लगेंगे। अगर आप किसी के प्रति भी आभार मानते हुए यह समझते है कि आप के पास अधिक धन है (कारण प्रभु, कोई मित्र, आपकी अपनी सोच, समझदारी अथवा कोइ कारण) कुछ भी जिसके प्रति आप आभारी है को सोचे/समझे तो धन में वृद्धि होगी।

धन ही क्यों? आप किसी से अपने अच्छे सम्बन्धों के लिए आभारी है। सम्बन्ध चाहें कम अच्छे हो केवल उसके आभार मात्र के मान लेने से सम्बन्धों में और अधिक वृद्धि होने लग जायेगी, ऐसा आप अनुभव करने लगेगें।

आप अपनी नौकरी के प्रति आभारी होगें आभार किसी व्यक्ति विशेष के लिए ना होकर आप उस नौकरी में हैं, इस बात का आभार, फिर चाहे वह नौकरी आपको अभी इतनी पसंद ना भी हो आपके द्वारा सोची गई/जैसी आप चाहते थे वैसी ना हो लेकिन आभार की भावना कि मेरे पास नौकरी है, भी बहुत बड़ा काम कर जाएगी और आप अपनी इसी नौकरी से आनन्दित होगें और आनन्द से की गई नौकरी में आप देखेंगे कि और अधिक सम्भावनाएं आपको प्राप्त होने लगेगी, आप और कीर्तिमान इसी नौकरी में प्राप्त करने लगेंगे। केवल आभार मात्र की भावना से ही यह करिश्मा हो जाता है ऐसा आभास आपको होगा।

इसके विपरीत अगर हम अपने आर्शीवाद नहीं गिनते तो हम उस नकारात्मक भावना कि हमारे पास क्या नहीं है कि गिनती करने लगते हैं, तो इसका भी उल्टा प्रभाव होता है, तो किसी अन्य व्यक्ति पर दोषारोपण करते हैं। जब हम किसी और से शिकायत रखते हैं तो आप देखेगें कि आपके चारो ओर शिकायतो/शिकवो का भंडार लगा होगा और प्रतिदिन इसमें बढ़ावा होता जायेगा। जैसे कि आपको शहर के ट्रैफिक से परेशानी/शिकायत है तब आप स्वयं गलत गाड़ी चला रहे हैं, आप नियमों का स्वयं पालन नहीं कर रहे हैं, के विषय में नहीं सोचेगें आप सरकार/ट्रैफिक पुलिस को दोष देंगें। आप इस दोषारोपण की भावना से दोष ही गिनते रहेंगे अर्थात नकारात्मक की गिनती बढ़ाते जायेगें तो यह बढ़ती ही जाएगी।

मैंने दोनों पर कार्य किया है दोषारोपण और आभार। दोषारोपण की सूची से सभी में केवल दोष ही दिखने लगेंगे लेकिन जब आभार/आर्शीवाद की सोच रखी तो इसकी सूची भी बढ़ती गई और अब जीवन में आनन्द की भावना/लहर थी जिससे जीवन की सोच बदलने लगी।

प्रसिद्ध लेख 'मालटबी ड़ी बाककोक' जिन्होने वाक्य लिखा था **'अपने आभार/आर्शीवादों की सोचो अपनी तकलीफो को नहीं'** अपने जीवन में एक कार्यशाला पर प्रयोग करें प्रतिदिन प्रातः आप अपने आर्शीवादों को लिखें। कम से कम दस आर्शीवादों को, आज आप इस लेख को पढ़ने के बाद दस आभारों की सूची बनाएंगे ऐसा आपसे आग्रह है। सूची बनाते हुए जब आप आभारी हो रहे हों तो सोचें कि आप –'क्यों' आभारी हैं। किसी व्यक्ति, किसी परिस्थिति, किसी वस्तु के प्रति तो उसे गहराई से सोचे और याद रखें आप उस आभार/ आर्शीवाद को, जितना गहराई से सोचेगें उतना ही आभार का अद्‌भुत प्रभाव आपके मन/विचारो को प्रभावित करेगा। इसलिए अपनी सूची बनाते समय क्यों आभारी है अवश्य लिखें। उदाहरण रूप में कैसे लिखे/समझें।

1. मुझे आर्शीवाद प्राप्त है ***क्या लिखें*** और बाद में लिखे ***क्यों प्राप्त है।*** 2. मैं प्रसन्न हूं ***इसलिए लिखें*** अब ***कारण लिखें।*** 3. मैं दिल से आभारी ***इसलिए लिखें*** किसके के ***कारण लिखें*** 4. मैं धन्यवादी हूं इस कार्य के लिए ***किसके प्रति लिखें***

जब आप दस आभार/आर्शीवादो की सूची बना चुके तो उसे पढ़े। जब आप सभी पढ़ चुकें तो तीन बार करिश्माई शब्द को बोले धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद और इस आभार को अधिक से अधिक महसूस करें।

यह आभार हो सकता है उस परमपिता परमात्मा के प्रति, इस भूमण्डल के प्रति, किसी जीव के प्रति, अपने आप के प्रति, किसी की अच्छाई के प्रति, या कोई भी ऐसी सोच जिसके प्रति आप आभारी है। जब आप किसी के प्रति आभारी होगें तो आप में एक नई ऊर्जा उत्पन्न होगी जो करिश्माई काम करेगी। आपकी आभारो/आर्शीवादों की सूची प्रतिदिन बढ़ती जाएगी। किसी विद्वान ने खूब लिखा है वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसके पास असंख्य आर्शीवाद हैं।

आभार/आर्शीवाद की सुची बनाना बहुत साधारण और ऊर्जावान आदत है। आप प्रतिदिन 10 आभार/आर्शीवाद सूची में अवश्य बढ़ायें और इसे कम से कम 30 दिनो तक अवश्य करें। प्रारम्भ में कठिन कार्य लगेगा। लेकिन आप संकल्प के साथ इस कार्य को करें। आपको प्रतिदिन दस ऐसे कारण अवश्य मिलेंगे जिसके प्रति आप आभारी होगें। मन/मस्तिष्क/विचारों में विशालता लायें। धन्यवाद के कारण मिल जाएगें। आप शायद आभारी होगें अपने परिवार के प्रति, अपने घर, अपने मित्र, अपने कार्य, अपने किसी समझोते के प्रति, ना जाने कितने कारण आपको मिलेंगे। आप आभारी हो सकते है। सूर्य, जल, भोजन, वायु, वृक्ष, जानवर, पक्षी, समुद्र, फूल, आकाश, वर्षा, पृथ्वी, खोजे आपको आभार देने के बड़े कारण मिल जायेगें।

अन्त में जीवन में खुशियाँ अधिक हैं, दुख कम हैं, सोच बदलें। हमेशा अपने आर्शीवादों को गिनते रहे। आपके पास जो है उसमें आनन्दित हों, जो नहीं है उसे सोचना छोड़ दें। दुख में भी सुखी रह सकते हैं पर सोचें कि जो आपके पास है वह कितनो के पास नहीं है। अपना मकान, अच्छी नौकरी, आज्ञाकारी संतान और ना जानें कितने और कारण। आओ अपने आर्शीवादों को गिनें।

अजय टंकारावाला

दयानन्द की दृष्टि में विद्या और अविद्याः सत्यार्थ प्रकाशनुसार

❒ प्रो. (डॉ.) सुन्दरलाल कथूरिया

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के नवम् समुल्लास में तो विद्या और अविद्या का विवेचन किया ही है, 'युजुर्वेद' के चालीसवें अध्याय के तीन मन्त्रों (मन्त्र संख्या, 12, 13 और 14) का भाष्य करते हुए भी इसी गूढ़ एवं रहस्यात्मक विषय का विवेचन किया है। ऋषिवर दयानन्द ने विद्या-अविद्या के रहस्य को समझाने के लिए वेद एवं योगदर्शन का आधार ग्रहण किया है तथा इस गहन विषय के सम्बन्ध में नवीन वेदान्तियों के मत का सतर्क खण्डन भी किया है।

नवम् समुल्लास के प्रारम्भ में स्वामी जी ने यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के चौदहवें मन्त्र को उद्धृत किया है। मन्त्र इस प्रकार है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

-यजुर्वेद, 40.14

मन्त्रपाठ के उपरान्त यदि इसका अन्वय कर थोड़ी-बहुत संस्कृत जानने वाला भी प्रयास करे तो वह इसका यही अर्थ करेगा कि जो विद्या और अविद्या इन दोनों को साथ-साथ जानता है अर्थात् इन दोनों के वास्तविक स्वरूप को साथ-साथ जानता है, वह अविद्या के द्वारा मृत्यु को तर कर विद्या से अमरता को प्राप्त करता है। यह मन्त्र रहस्यात्मक, गूढ़ और गहन-गंभीर है। सामान्यतः शब्दकोशों में विद्या का अर्थ ''ज्ञान' और अविद्या का अर्थ 'अज्ञान' मिलेगा, किन्तु ऋषि वर दयानन्द ने 'अविद्या' का अर्थ किया है 'कर्मोपासना'। 'अविद्या' का यह अर्थ किसी भी शब्द क्रोश में नहीं मिलेगा। 'अविद्या' का यह अर्थ तो कोई मन्त्रद्रष्टा ऋषि ही कर सकता है और 'अविद्या' का यह दार्शनिक अर्थ समाधिस्थ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया है। स्वामी जी के शब्दों में, 'जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है।' (सत्यार्थप्रकाश, नवम् समुल्लास, पृ. 166) स्पष्टतः ऋषिवर दयानन्द ने 'अविद्या' का अर्थ किया है 'कर्मोपासना' तथा 'विद्या' का अर्थ किया है 'यथार्थ ज्ञान'। साथ ही योगसूत्र के साक्ष्य पर 'अविद्या' और 'विद्या' को और अधिक स्पष्ट किया है, ताकि सामान्य साधकों की समझ में भी वह विषय अच्छी प्रकार से आ जाए।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के बारहवें मन्त्र में कहा गया है कि जो लोग अविद्या की उपासना करते हैं, वे अज्ञानरूप घोर अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं तथा जो लोग विद्या में रत हैं, वे उन अज्ञानियों से भी अधिक अन्धकार में प्रविष्ट होते हैं। जहाँ यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के चौदहवें मन्त्र में विद्या से मोक्ष प्राप्ति की बात की गयी हैं, वहाँ इस मन्त्र में विद्या से घनघोर अन्धकार में प्रविष्ट होने की बात कही गयी है-और यह स्थिति सामान्य पाठक। साधक को असमंजस में डाल सकती है, अतः इन दोनों मन्त्रों में आगत 'विद्या' शब्द के अर्थ-भेद को ठीक-ठीक हृदयगम कर लेना अत्यावश्यक है।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के बारहवें मन्त्र में आये 'विद्या' शब्द का अर्थ करते हुए स्वामी जी ने लिखा है कि जो शब्द, अर्थ और इनके सम्बन्ध को तो जानते हैं, किन्तु जो सत्यभाषण, पक्षपातरहित, न्यायाचरण के धर्म से रहित हैं तथा अहमन्य हैं, ऐसे तथाकथित विद्वान् वस्तुतः अज्ञानी ही हैं और उनकी यह विद्या वस्तुतः अविद्या ही है। विद्या वास्तव में विद्या तब बनती है, जब वह वैदिक आचरण से जुड़ जाए तथा विद्वान् व्यक्ति को आचारवान एवम् विनम्र बना दे। आचारहीन व्यक्ति का कोरा शब्दार्थ वस्तुतः अविद्या ही है, क्योंकि न तो उससे आत्मा को जाना जा सकता है, न ब्रह्म को और न मोक्ष को ही प्राप्त किया जा सकता है। कहा भी है-'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' तथा 'विद्या ददाति विनयम्'। विनम्र, सदाचारी तत्त्वज्ञानी ही मुक्ति लाभ का अधिकारी हो सकता है।

'सत्यार्थप्रकाश' के नवम् समुल्लास में अविद्या के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी ने महर्षि पठंजलि के योग दर्शन के साधनपाद के 5वें सूत्र का उल्लेख किया है, जो निम्नस्थ है-

अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या॥

इस सूत्र का अर्थ है कि अनित्य को नित्य, अशुचि (अपवित्र) को शुचि (पवित्र), दुःख को सुख और अनात्मा को आत्मा मानना-ये चार प्रकार का मिथ्याज्ञान 'अविद्या' है। अविद्या विद्या विरूद्ध ज्ञानान्तर है-विपरीत ज्ञान है। अविद्या के उक्त चार प्रकारों को स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी ने सामासिक शैली में कुछ उदाहरण दिये हैं: 'जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा, सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। अशुचि अर्थात् मलमय स्त्र्यादि के और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि दूसरा, अत्यन्त विषयसेवनरूप दुःख में सुखबुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है।' (सत्यार्थ प्रकाश, नवम समुल्लास, पृष्ठ 166) अविद्या की उपासना का फल है-दृष्टि के रोकने वाले अन्धकार और अत्यन्त अज्ञान को प्राप्त होना। अन्यत्र (यजुर्वेद, 40/12) स्वामी जी ने अविद्या का अर्थ यह भी किया है-'अविद्या अर्थात् ज्ञानादि गुणरहित कारणरूप परमेश्वर से भिन्न जड़ वस्तु की उपासना' (देखिए-यजुर्वेद भाष्यम्-चतुर्थोभागः, पृ. 317)। यजुर्वेद, 40/14 के अनुसार व्यक्ति/ साधक अविद्या से मृत्यु को तर जाता है, मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। सामान्य अध्येता को वेद का यह कथन असमंजस में डाल सकता है, किन्तु ऋषिवर दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य (40.12-14) का चिन्तन-मनन और स्वाध्याय करने पर इस असमंजस का स्वतः ही निराकरण हो जाता है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया है कि जो वस्तु अविद्यारूप है, वह जानने योग्य है, उपकार लेने योग्य है और जो चेतन ब्रह्म तथा विद्वान का आत्मा है, वह उपासना के योग्य है। स्वामी जी अविद्या को 'कर्मोपासना' के रूप में स्वीकार करते हुए यह कहना चाहते हैं कि हम सुष्टि के समस्त पदार्थो का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर उनका सदुपयोग करें, पर जड़ वस्तु के उपासक न बनें। उपासनीय तो केवल सर्वशक्तिमान चेतन ब्रह्म ही है। उसे जानने और पाने के लिए, मुक्ति लाभ के लिए संसार के सभी जड़ पदार्थो, शरीर, इन्द्रियों, मन, चित्त आदि का सम्यक् ज्ञान और साधन-रूप में इनका सम्यक् सदुपयोग अत्यावश्यक है। वैदिक कर्मो एवं सदाचारपूर्वक धर्माचरण के बिना तथा विद्या के वास्तविक स्वरूप को समझे बिना तो मुक्ति-लाभ संभव ही नहीं।

विद्या के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए 'सत्यार्थप्रकाश' के नवम् समुल्लास में स्वामी जी ने लिखा है, 'अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र में पवित्र, दु:ख में दु:ख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है।' (पृ. 166) विद्या और अविद्या के अन्तर को एक वाक्य में स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने लिखा है कि 'जिससे पदार्थो का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्व-स्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है।' (पृष्ठ 166) चूंकि मुक्ति जीव को प्राप्त होती है तथा जीव और ब्रह्म में और भी बहुत से अन्तर हैं, अत: स्वामी जी ने नवीन वेदान्तियों के जीव-ब्रह्म की एकता के सिद्धान्त का स प्रमाण खण्डन किया है।

विद्या-अविद्या का विवेचन करते हुए स्वामी जी ने एक प्रकार से ज्ञान-कर्म-उपासना के सम्यक समन्वय पर बल दिया है। पंचक्लेशों में सर्वप्रथम अविद्या का ही उल्लेख किया गया है। स्वामी जी के अनुसार, 'कर्म और उपासना अविद्या इसलिए है कि यह ब्राह्म और अन्तर क्रिया विशेष है, ज्ञान विशेष नहीं। इसी से मन्त्र (यजुर्वेद, 40.12) में कहा है कि बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दु:ख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाणमूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है।' (पृ. 166) स्पष्ट: मुमुक्षु को चाहिए कि वह अपने कर्म, ज्ञान और उपासना को पवित्र करे। स्थूल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि अविद्या भौतिकता में अत्यधिक अनुरक्ति का नाम है और विद्या ब्रह्मज्ञान या आध्यात्मिक चेतना से सम्बद्ध है अविद्या के उपासक अनित्य को नित्य, अशुद्ध को शुद्ध, दु:ख को सुख और शरीर को आत्मरूप में स्वीकार करते हुए जड़ वस्तु की उपासना में लीन रहते हैं, किन्तु विद्या के उपासक ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त कर, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान कर, सांसारिक वस्तुओं, इन्द्रियों, शरीरादि का सदुपयोग करते हुए विद्या के द्वारा अमरत्व को प्राप्त करते हैं।

- बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058, मो. 9718479970

पशु-पक्षी और हम

❒ ओमप्रकाश बजाज

ईश्वर ने किसी भी प्राणी को बिना मकसद नहीं बनाया, यह भी मानना पड़ेगा कि प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए सभी जीव जंतुओं का अस्तित्व आवश्यक है, रंग-बिरंगे ये पशु पक्षी हमारे संसार को सुंदर और मनमोहक बनाते हैं, कल्पना कीजिए कि यदि ये न होते तो हमारी यह दुनिया कितनी सूनी-सूनी और अनाकर्षक होती।

प्रकृति का संतुलन वैज्ञानिक और नपा तुला है, किसी एक अंग अंश कोण को छेड़ने का अर्थ होगा उस संतुलन को असंतुलित कर देना, हमारी सारी वैज्ञानिक प्रगति और उपलब्धियां भी पुन: उसे संतुलन से खिलवाड़ करने की चेष्टा हुई है परिणाम हानिकारक ही रहे हैं, चाहे चीन में चिड़ियों का समूल नष्ट करने का अभिमान हो अथवा भारत में मेढकों की टांगों अथवा बंदरों के निर्यात की चेष्टाएं या हमारे दक्षिणापूर्वी पड़ोसी देशों में कुत्ते और सांप के मांस भक्षण की बढ़ती हुई प्रवृति के कारण इन जन्तुओं का तीव्र गति से ह्रास। कुछ ही समय बाद मनुष्य को अपनी गलती का अहसास हो जाता है मगर हो चुकी हानि की भरपाई में लम्बा समय लगता है।

हमारे देश में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से जंगल नष्ट हुए हैं, पर्यावरण असंतुलित हुआ है, मौसमों में तबदीली आई है, सदियों से चला आ रहा जाना पहचाना ऋतुचक्र प्रभावित हुआ है, ग्लोबल वार्मिंग की चीख पुकार मच रही है, पानी की कमी निरन्तर होती जा रही है, अन्य दुष्परिणाम क्या क्या होंगे अभी अनुमान लगाना कठिन है, प्राकृतिक वनरोपण में पक्षियों का बहुत बड़ा योगदान होता है, पक्षी विभिन्न प्रकार के वृक्षों के फल खाकर उनके बीज दूर दूर तक बिखेरने में सहायक होते हैं, यह छोटे छोटे पक्षी हमारी भलाई का कितना बड़ा काम करते हैं,

कुछ समय पूर्व तक हमारे परिवारों के बड़े-बूढ़े पक्षियों को चुग्गा नियमित रूप से डालते थे, चीटियों के बिलों पर आटा और शक्कर डालने का आम रिवाज था। गाय को आटे की लोई खिलाना, नाग पंचमी पर नागों को दूध पिलाना, यहां तक कि श्राद्धों आदि के अवसर पर कौओं और कुत्तों तक को खिलाने का प्रावधान था। हमारे यह रिवाज और पीढ़ियो से चली आ रही परम्पराएं सदियों के अनुभव और वैज्ञानिक कारणों पर आधारित थे, जिन्हें हम ने अपनी आधुनिकता और प्रगतिशीलता के अहम एवं भ्रम में नकार दिया है। परिणाम एक एक कर के हमारे सामने आने लगे हैं। अपने सीमित साधनों में हम चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं, बहुत से लोगों का थोड़ा योगदान इकट्ठा हो कर काफी हो जाता है, जैसे आप के छोटे से आंगन में लगाए हुए दो चार पौध अथवा मुंडेर पर रखे हुए रंग-बिरंगे फूलों के चार छ: गमले न केवल आप के घर की शोभा बढ़ा कर आंखों को तृप्ति प्रदान करते हैं बल्कि पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने में भी सहायक होते हैं, इसी प्रकार इन मासूम पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं के प्रति आप का स्नेह भाव प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होने के साथ साथ आप को आंतरिक आनन्द और संतुष्टि भी प्रदान करता है।

कल प्रात: भोर में उठकर एक मुट्ठी अनाज अपने घर की मुंडेर पर बिखेर दीजिए और पास में किसी बर्तन में थोड़ा सा पानी भी रख दीजिए। जरा सी देर में चिड़ियों, गौरैयों, कबूतरों, कौवों का झुंड सा आ जाएगा, उनको दाना चुगते, पानी पीते, खेलते, अठखेलियां करते देखना कितना आनन्दमय है यह अनुभव किया जा सकता है, वर्णन नहीं। आप देखेंगे कि कुछ ही दिनों में आप के यह पंखधारी छोटे-छोटे मेहमान आपके उठने से पहले ही आप की प्रतीक्षा में आप की मुंडेर पर मौजूद होने लगेंगे, आप के परिवार के नन्हे-मुन्ने भी अपने आप बिस्तर से कूद कर आंखे मलते हुए अपने इन प्यारे दोस्तों से मिलने के लिए दिन प्रति दिन उत्सुक रहेंगे।

आइए, अपने इस संसार को सुंदर, सुरक्षित, संतुलित और आने वाली पीढ़ियों के रहने योग्य बनाए रखने के लिए हम अपनी सामर्थ्यानुसार भरसक योगदान करने में जुट जाएं।

- बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001, म.प्र.
फोन- 0761-2426820, मो. 9826496975

प्याऊ का महत्व

ग्रीष्म ऋतु में और वसंत ऋतु में जो पानी पिलाने की व्यवस्था करता है, उसके पुण्य का हजारों जिह्वाएं भी वर्णन नहीं कर सकती। गर्मी बढ़ने के साथ पानी की आवश्यकता भी बढ़ने लगती है। प्राय: यह देखा जाता है कि लोगों की प्यास बुझाने के लिए पौसरे (प्याऊ) की व्यवस्था लोग करते हैं। इस विषय पर भारतीय संस्कृति क्या कहती है? यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्याऊ द्वारा प्यास बुझाने की प्रक्रिया को भारतीय संस्कृति में दान कहते हैं। फाल्गुन मास के बीत जाने पर चैत्र से पानी पिलाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। यदि कम धन वाला व्यक्ति है, तो उसे तीन पक्ष अर्थात् वैसाख शुक्ल पक्ष, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष व ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में अवश्य जल पिलाने की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसा करने से प्यासा व्यक्ति संतुष्ट होता है और इस फल के भागी प्याऊ कर्म में संलग्न लोग होते हैं।

तीनों लोकों में जल को जीवन, पवित्र और अमृत माना गया है। इसीलिए पुण्य की कामना वाले लोगों को जल पिलाने की व्यवस्था करनी चाहिए। शास्त्रों में प्रत्येक मौसम के अनुरूप दान का अत्यन्त महत्व बतलाया गया है। जिससे गरीब से गरीब व्यक्ति भी सुखपूर्वक रह सकें तथा सामाजिक विकास में सभी की भागीदारी हो सके। सर्दी के मौसम में कंबल का दान, लकड़ी और अग्नि की व्यवस्था, वर्षा ऋतु में छतरी का दान या किसी गरीब व्यक्ति के घर को आच्छादित करना या घर बनवाकर देना तथा ग्रीष्म ऋतु में जल देना, गरीब व्यक्तियों को घड़े का दान करना, सत्तू का दान, अत्यन्त श्रेयस्कर बतलाया गया है। किसी को जल पिलाने के लिए अगर जल खरीदना भी पड़े, तो भी उसको यथाशीघ्र जल पिलाना चाहिए। **<u>गर्मी के मौसम में पानी पिलाने की व्यवस्था केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि पशु, पक्षी इत्यादि सभी के लिए करने का प्रयास करना चाहिए।</u>** शास्त्र तो कहते हैं कि पेड़-पौधों को भी समुचित पानी देना चाहिए। गर्मी में जिस क्षेत्र में पानी अभाव में पेड़-पौधे सूखते हैं, वहां संक्रामक रोगों की अभिवृद्धि होती है। वैसे लोगों को जो पानी में मिलावट करते हैं, कुएं या तालाब पाटकर अपना घर या चौपाल बना लेते हैं, पानी को अनावश्यक बहते देख उसे सुरक्षित रखने का उचित प्रतिकार नहीं करते, नदी या तालाब में दूषित जल छोड़कर उसे गंदा करते हैं, किसी के रखे हुए जल को चुरा लेते हैं, किसी प्याऊ दान करने वाले मनुष्य को पानी पिलाने में बाधा उत्पन्न करते हैं, ग्रीष्म में छाया में खड़े पशु, पक्षी एवं मानवों को हटा देते हैं, पानी न देना पड़े इसके लिए असत्य बोलते हैं, इन सभी को शास्त्र पापी की उपमा देते हैं। वसंत और ग्रीष्म, यानी गर्मी के चार महीनों में घड़े का दान, वस्त्र का दान तथा पीने योग्य जल का दान जो करता है वह पुण्य का भागी होता है। प्यास से व्याकुल व्यक्ति जिस क्षेत्र से होकर गुजरता है, उस क्षेत्र का पुण्य क्षीण हो जाता है। इसलिए पुण्य की रक्षा हेतु भी प्याऊ की व्यवस्था करनी चाहिए। **आर्यवीर आर्य, फरीदाबाद**

स्वास्थ्य-रक्षा : कुछ महत्वपूर्ण सूत्र

रुग्णता एक अस्वाभाविक क्रिया है जो आहार-विहार में गड़बड़ी से, प्रकृति की व्यवस्था के उल्लंघन से उत्पन्न होती है। आरोग्य आहार-विहार के संयम से आता है, बहुमूल्य आहार एवं औषधियों से नहीं।

- ❒ भोजन हमेशा तभी करें जब बहुत तेज भूख लगी हो।
- ❒ भूख से थोड़ा कम ही खाएं।
- ❒ भोजन सात्विक, शुद्ध पदार्थों से निर्मित ही करें।
- ❒ अधिक तीखा, खट्टा, मसालेदार, चिकनाई युक्त भोजन स्वास्थ्य का शत्रु है।
- ❒ भोजन में सलाद, कच्ची व हरी सब्जियां, दूध-दही, फल सभी वस्तुओं को थोड़ा-थोड़ा शामिल करें।
- ❒ आहार को अधिक पीसने, तलने, भूनने से उसके स्वाभाविक गुण नष्ट हो जाते हैं। दाल, शाक, फल छिलके सहित खाएं।
- ❒ अंकुरित दालें, चना, गेहूं में थोड़ा सा नींबू, टमाटर, हरी मिर्च व बहुत हल्का नमक मिलाकर खाएं तो स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा रहता है। मांसपेशियां पुष्ट होती हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।
- ❒ सप्ताह में एक दिन उपवास रखें। उपवास वाले दिन नींबू, छाछ, दूध, फल, सलाद आदि ही लें। गरिष्ठ भोजन या नित्य-प्रति लिया जाने वाला भोजन दिन में एक बार भी न करें। पानी खूब पिएं।
- ❒ प्रात:काल रात को तांबे के बर्तन में रखा हुआ जल अथवा ताजा जल गुनगुना करके, दो गिलास अवश्य पिया करें। उसके बाद ही शौच जाने की आदत डालें। प्रात:काल चाय न पिएं। प्रात:काल इस प्रकार जल सेवन अनेक रोगों से बचाता है और शरीर से विषैले तत्त्वों को धो डालता है।
- ❒ भोजन के साथ जल के स्थान पर दही, मट्ठा, छाछ, जूस, फल अथवा सब्जी कोई ले सकते हैं।
- ❒ शरीर के कल-पुर्जों को चुस्त-दुरूस्त रखने के लिए नियमित व्यायाम आवश्यक है।
- ❒ प्रात:काल, शौचादि से निवृत्त होकर टहलना व्यायाम माना गया है।
- ❒ जवान लोग प्रात:काल धीरे-धीरे दो-तीन कि.मी. की दौड़ लगाया करें। सूर्य नमस्कार एक अच्छा व्यायाम है।
- ❒ प्रात:काल भारी नाश्ता वे ही लें जिन्हें दिन भर कठोर शारीरिक श्रम करना है।
- ❒ प्रात:काल नाश्ते में अंकुरित अनाज, दूध, छाछ लिया जा सकता है। साथ में कोई फल भी ले सकते हैं।
- ❒ चॉकलेट, टॉफी, आइस्क्रीम, च्युइंगम, बबलगम जैसी वस्तुएं दांतों को गला देती हैं। इनका सेवन न स्वयं करें, न बच्चों को करने दें।
- ❒ कभी भी भोजन करने के फौरन बाद स्नान न करें। भोजन के तीन घंटे बाद ही स्नान करें।
- ❒ जहां तक हो सके स्नान ठंडे पानी से ही करें। गठिया व जोड़ों के दर्द के रोगी गुनगुने पानी से स्नान कर सकते हैं।
- ❒ सिर की मालिश सप्ताह में तीन बार करें। सिर में साबुन, शैम्पू के स्थान पर मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग करें।
- ❒ भोजन करने के दस मिनट बाद दोनों समय मूत्र त्याग अवश्य करें। ऐसा करने से मूत्र व अन्य संबंधित विकारों से बचा जा सकता है।
- ❒ चालीस वर्ष की उम्र के बाद वर्ष में एक बार अपने पारिवारिक या किसी विशेषज्ञ चिकित्सक से सलाह करके अपनी सभी रक्त, मलमूत्र, हृदय, आँखें, फेफड़ों, गुर्दों आदि की जांच अवश्य करा लेनी चाहिए।
- ❒ नींद कम से कम 6 घंटे की आवश्यक है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

(पृष्ठ 1 का शेष)

चौधरी, श्रीमती अमृतापाल, श्री रवि बहल आदि मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर श्री दिनेश पथिक एवं ब्रह्मचारियों के भजन प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर श्रीमती वेद साहनी के पुत्र डॉ. अनिरूद्ध साहनी, श्रीमती बेहल (फरीदाबाद), श्रीमती उषा अरोड़ा एवम् श्री रमेश अरोड़ा, श्री हर प्रकाश खन्ना, आर्य समाज कस्तुरबा नगर दिल्ली एवम् हिमाचल से कैस्य परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर टंकारा ट्रस्ट के स्व. ट्रस्टी डॉ. वी.एच. पटेल की स्मृति को स्मरण करते हुए उनकी धर्मपत्नी श्री भानु बहन को भी सम्मानित किया गया।

अपराहन् 2 बजे से 5 बजे तक युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीधाम) उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में श्री राजीव चौधरी, श्री एस.के. दुआ उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों एवं आर्य समाज जामनगर की कन्याओं द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई। इस कार्यक्रम का संयोजन टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार ने किया।

इस सत्र के अन्त में पं. रमेश चन्द मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों को याद कराते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

सायंकालीन यज्ञ सायं 5 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया। प्रातः एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिए जाने वाले अभूतपूर्वक योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस

अवसर पर श्रीमती उषा अरोड़ा (दिल्ली), श्री अशोक आर्य (ज्योतिबाफूले नगर), श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री वी पी सिंह (गुड़गांव), श्रीमती अमृतापाल (दिल्ली) श्रीमती भानुबेन (भुज), श्री सतीश कुमार सिंगला (दिल्ली) श्री हरप्रकाश खन्ना (दिल्ली) आदि को सम्मानित किया गया।

वेद प्रवचन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर जहां उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए, वहीं मुख्य रूप से श्री दिनेश पथिक जो कि अमृतसर से पधारे थे, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की और विशेष अतिथि के रूप में श्री सुनील मानकटाला, श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती भानुबेन आदि उपस्थित थे।

दिनांक 13 फरवरी 2018 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रातः 9 बजे पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान श्री जे.पी. शूर, निदेशक, डी.ए.वी. स्कूल्स, मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री सुनील मानकटाला, श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल, प्रिं. डॉ. राजेश कुमार, डॉ. श्रीमती अनीता मेनन, प्रि.अजय बेरी, प्रि. अन्जना गुप्ता एवम् प्रि. श्री परमजीत कुमार उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री जे.पी. शूर जी ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही वेदपाठियों का भी वरण किया। तदुपरान्त अग्निढ्वान कर यज्ञ आरम्भ किया।

तदुपरान्त श्री जे.पी. शूर सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुंचें। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध ट्रस्ट श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया तदुपरान्त बाहर से आए हुए लगभग 150 प्रतिनिधि आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था, जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री जे.पी. शूर ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद प्रकट किया और उनके द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक जी ने ध्वजगीत गया।

तदुपरान्त एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का आरम्भ श्री जे पी शूर द्वारा किया गया। शोभायात्रा में स्वामी शान्तानन्द, स्वामी आर्येशानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, श्री जे.पी. शूर, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री सुनील मानकटाला, श्री अरूण अब्रोल, श्री लधाभाई पटेल, श्री हंसमुख परमार, पं. रमेश चन्द्र मेहता, प्रिं. राजेश कुमार, डॉ. अनीता मैनन, श्री अजय बेरी, श्रीमती अंजला गुप्ता, श्री परमजीत कुमार, श्री अशोक कुमार आर्य, श्री राजीव चौधरी, श्री वी.पी. सिंह, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सुशील भाटिया, श्री राम चन्द्र अरोड़ा आदि उपस्थित थे। लगभग डेढ़ घंटे तक यज्ञ का संचालन किया गया।

तदुपरान्त श्री योगेश मुंजाल अपने परिवार के साथ वहां उनके परिवार द्वारा निर्मित किए गए स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल भवन पर पहुंचे। जहां स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के परिवार की ओर से नवनिर्मित स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल भवन का उद्घाटन पूर्ण वैदिक रीति से श्री योगेश मुंजाल जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्री उमेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल के परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त भारी संख्या में आर्य जन उपस्थित थे। इस गुरुकुल भवन में ब्रह्मचारियों की कक्षाओं के अतिरिक्त छात्रावास की भी व्यवस्था की गई है।

श्री ओंकारनाथ सिलाई कढ़ाई केन्द्र का नवीनीकरण जोकि श्रीमती शिवराजवती मानकटाला एवं उनके परिवार द्वारा किया गया था, का उद्घाटन श्री सुनील मानकटाला जी द्वारा किया गया। इसके बाद टंकारा के ब्रह्मचारियों के लिए शौचालय, स्नानागार एवं उसके ऊपर भूमितल से 30 फीट ऊँचाई पर 50 हजार लीटर की क्षमता की पानी की टंकी जो कि ला. दीवानचन्द ट्रस्ट द्वारा निर्मित की गई है, का उद्घाटन श्री योगेश

मुंजाल जी द्वारा किया गया।

अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात की अध्यक्षता में किया गया जिसमें विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्री जे. पी. शूर उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पधारे डॉ. रूप किशोर शास्त्री, वेद विभागाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी ने अपने वक्तव्य में संस्कृत भाषा का जो प्रतिशत घट रहा है, पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि यदि हम इस ओर ध्यान नहीं देंगे तो आने वाले समय में

अन्दर कोई अवगुण विद्यमान हैं तो मैं उनका त्याग करूंगा और आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करूंगा। संस्कृत की रक्षा के लिए डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति तथा इसके अन्तर्गत चल रहे सभी विद्यालय तत्पर हैं। मैं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति की ओर से घोषणा करता हूं कि संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए हम सदा प्रयासरत रहेंगे। इस अवसर पर उन्होंने पांच लाख का चैक टंकारा कार्यो के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से टंकारा ट्रस्ट को भेंट किया जिसका पधारे हुए आर्य जनों ने करतल ध्वनि से उनका

संस्कृत राष्ट्र भाषाओं की श्रेणी से अलग हो जायेगी इसलिए हम सबका कर्त्तव्य है कि इस ओर ध्यान दें और आगामी जनगणना के समय मातृभाषा हिन्दी के साथ संस्कृत का भी उल्लेख करें। इस अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी सवितानन्द सरस्वती (रांची) एवं श्री कमलेश कुमार अग्निहोत्री (अहमदाबाद) को वेद प्रचारक के रूप में दिया गया जोकि प्रतिवर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से इस अवसर पर दिया जाता है।

श्री जे.पी. शूर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि स्वामी जी के इस नगर में आकर महसूस हुआ है कि यहां पर कुछ तरंगे शरीर और आत्मा को प्राप्त हो रही हैं। मैं इस मंच से घोषणा करता हूं कि यदि मेरे

स्वागत किया।

श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा गया कि आज हम सबको प्रण लेना होगा कि संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयास करेंगे। इसी सत्र में टंकारा समाचार का विशेषांक ''बोधांक'' का भी विमोचन उपस्थित मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया।

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई जिसमें श्री दिनेश पथिक द्वारा स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और इसके अतिरिक्त पधारे हुए आर्यजनों ने स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

टंकारा बोधोत्सव 2018 की चित्रमय झांकी

આર્ય સમાજ, જૂનાગઢ
આપનું હાર્દિક સ્વાગત કરે છે.

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई
प्रशिक्षण केन्द्र - टंकारा

आर्य समाज
ARYA SAMAJ
INDUR (NIZAMABAD), TELANGANA

આર્યસમાજ પોરબંદર

आपका हार्दिक स्वागत है

(सी-3) जनकपुरी नई दिल्ली-110058

ओ३म्
आर्य समाज

आर्य विद्यालय
आपका हार्दिक स्वागत करता है

टंकारा बोधोत्सव की चित्रमय झलकियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नव मनोनीत ट्रस्टी
डॉ. अविनाश भट्ट
जाम नगर, गुजरात

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा
गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

वास्तविक सुन्दरता का नुस्खा

यदि अपने रंग रूप से असन्तुष्ट हैं तो अपनी आन्तरिक सुन्दरता बढ़ाइए फिर देखिए अपनी सुन्दरता का निखार। इसके लिए सुन्दरता का लेप फेस पैक, क्रीम इत्यादि लोशन स्वयं ही तैयार करने पड़ेंगे क्योंकि ये कहीं बने बनाए बाजार में नहीं बिकते। यह लेप स्त्री पुरूष के लिए समान है, अलग-अलग नहीं।

❑ भरपूर मात्रा में प्यार लीजिए जितना अधिक लें, उतना ही अच्छा, यह मृदुतकारी है। ❑ उसमें मुट्ठी भर सहृदयता मिलाइए, यह चिकनाई देगा। इससे घर्षण (ईर्ष्या-द्वेष) मिटेगा। ❑ ढेर सारी प्रसन्नता उड़ेलिए, यह उदासी दूर करके आनन्द फैलाएगी। ❑ करूणा का उपयोग कीजिए परन्तु विवेक भी आवश्यक है। ❑ अब विनोद (हंसी-मजाक) की डली इसमें घोल लीजिए। यह भोजन में मसाले के रूप में काम करेगा। ❑ खूब सारा सब्र (सहनशीलता) मिलाइए। इससे सफलता का मार्ग मिलेगा। ❑ दूसरों में विश्वास की भावना काफी मात्रा में मिलाइए। इसमें महत्त्वाकांक्षा को बल मिलेगा और प्रयत्न पुष्ट होगा। ❑ पर्याप्त मात्रा में आशा को घोलिए। यह निराशा को दूर भगाएगी। ❑ इनके साथ खूब सारा साहस मिलाइए। इससे सम्भावनाओं के द्वार खुलेंगे। ❑ जितनी भी मुस्कान बटोर सकें, बटोर कर इस पर छिड़क दीजिए। इससे बहुत सारी कमियां स्वयं ही छिप जाएंगी।

ये सब चीजें अच्छी तरह मिला लीजिए। जब मन भावन रंग का लेप हो जाए तो प्रतिदिन अपने हृदय पर इसका लेप किया करें। जितना भी मोटा लेप लग जाए तो कोई हर्ज नहीं, लगा रहने दीजिए, सुन्दरता में अधिक निखार आएगा।

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

માનવતાનું મૂળ "સત્યાર્થ પ્રકાશ"

મૂળ હિન્દીમાં લેખક: આચાર્ય કર્મવીર (અગ્નિદૂત માસિકના ફેબ્રુઆરી ૨૦૧૮ના અંકમાંથી અનુદિત)

અનુવાદક: રમેશચન્દ્ર મહેતા

માનવતા શબ્દ 'માનવ' શબ્દમાંથી ભાવમાં 'તલ્' પ્રત્યય લાગીને બને છે. માનવતાનો અર્થ છે માનવપણું – મનુષ્યપણું. માનવ અને મનુષ્ય બંને સમાનાર્થક છે. મનુની અપત્યને માનવ કહે છે. આખ્યાનો પ્રમાણે મનુને માનવ-જાતિનો આદિ પુરુષ માનવામાં આવે છે, પરંતુ નિરુક્તની દૃષ્ટિમાં મનુ શબ્દ યૌગિક છે. મનન કરનાર પ્રાણી જ મનુ છે. એટલે મનનશીલ પ્રાણીના સન્તાન માનવ કે મનુષ્ય કહેવાય છે. યાસ્કના મત મુજબ મનુષ્ય એ છે, જે વિચાર કરીને – વિવેકપૂર્ણ કાર્ય કરે છે. ઋષિ દયાનન્દે પણ આજ રીતે મનુષ્યના લક્ષણની વ્યાખ્યા કરતા કહ્યું છે - "જે વગર વિચાર્યે કોઈ કામ ન કરે, એનું નામ મનુષ્ય છે." ઋષિએ પોતાના બધાં જ ગ્રન્થોમાં આવા માનવ કે માનવતાનું વિશ્લેષણ કર્યું છે. અહીં માત્ર એમના સત્યાર્થ પ્રકાશના આધારે જ માનવતાનું નિરૂપણ કરવું અભીષ્ટ છે.

માનવતાનું પ્રથમ લક્ષણ છે: સદ્-અસદ્‌નો વિવેક – અસત્યનો ત્યાગ અને સત્યનું ગ્રહણ. ઋષિના શબ્દોમાં જે પદાર્થ જેવો છે, એને એવો જ કહેવો, લખવો અને માનવો સત્ય કહેવાય છે. સત્યોપદેશ વિના બીજું કાંઈ પણ મનુષ્ય-જાતિની ઉન્નતિનું કારણ નથી. જે સત્ય અને ઉચિત છે, જો મનુષ્ય એને ઓળખી લે, એનો સ્વીકાર કરે અને એના પર જ આચરણ કરે, તો અનાથી માત્ર એનું જ જીવન સમુન્નત નથી થતું, અપિતું સમાજ પર યથોચિત ઉપકાર પણ થાય છે. એ સમ્ભવ છે કે કેટલાક અવિવેકી લોકો એને ખોટું માને અને એનો વિરોધ પણ કરે, પરંતુ માનવતાના અનુયાયી એને ક્યારેય અયોગ્ય નહીં માને અને બીજા લોકો પણ સમય આવ્યે એના વિચારો અને આચારોના મહત્વને સમજવા લાગશે. દયાનન્દને દૃઢ વિશ્વાસ છે કે માનવનો આત્મા સ્વભાવથી જ સત્ય તરફ નમે છે – "મનુષ્યનો આત્મા સત્યાસત્યને જાણવાવાળો છે, તથાપિ પોતાના પ્રયોજનની સિદ્ધ માટે હઠ, દુરાગ્રહ અને અવિદ્યાદિ દોષોને કારણે સત્યને છોડીને અસત્ય તરફ ઝુકી જાય છે." આ કથનથી સત્ય ગ્રહણના સાધન તથા એમાં આવનારા વિઘ્નો તરફ ઇશારો પણ કર્યો છે.

સત્યગ્રહણના માર્ગમાં મુખ્ય બે વિઘ્નો છે, એક તો અજ્ઞાન કે અવિદ્યા અને બીજી પક્ષપાત. આ બંનેનો પરિત્યાગ કરવાથી જ સત્ય પ્રગટ થાય છે. અવિદ્યાનો અર્થ છે – મિથ્યાજ્ઞાન. "વિપરીત જ્ઞાન અવિદ્યા કહેવાય છે." વિદ્યા અને અવિદ્યાનું સ્વરૂપ સત્યાર્થપ્રકાશમાં આ રીતે કહ્યું છે –

વેત્તિ યથાવત્ તત્ત્વસ્વરૂપં યયા, સા વિદ્યા, યયા તત્ત્વસ્વરૂપં ન જાનાતિ, ભ્રમાદન્યસ્મિન્ અન્યન્ નિશ્ચિનોતિ યયા, સા અવિદ્યા.

- જેનાથી પદાર્થોનો યથાર્થસ્વરૂપ બોધ થાય એ વિદ્યા અને જેનાથી તત્ત્વસ્વરૂપ ન ઓળખાય, અન્યમાં અન્યબુદ્ધિ થાય, એ અવિદ્યા કહેવાય છે. આ અવિદ્યાને કારણે વ્યક્તિ વિવેક ખોઈ બેસે છે, એટલે સત્યને ગ્રહણ નથી કરી સકતો. જ્યારે એ પદાર્થોને યોગ્ય રીતે સમજવા લાગે છે ત્યારે જ સત્યને ગ્રહણ કરી શકે છે.

એવું પણ જોવામાં આવે છે કે વ્યક્તિ વિદ્વાન છે, પદાર્થોને જાણે જાણે છે છતાં પણ સત્યને ગ્રહણ નથી કરી સકતો. આમ શા માટે થાય છે? એમાં વ્યક્તિનું સામર્થ્ય અને દુરાગ્રહ આદિ જ પ્રમુખ નિમિત્ત કહી શકાય. આને જ કારણે માણસ જાણવા છતાં સત્યથી દૂર ભાગીને અસત્યમાં પ્રવૃત્ત થઈ જાય છે. વિવેકી નહીં પણ પક્ષપાતી થઈ જાય છે. એટલે જ સત્‌ને ગ્રહણ નથી કરી સકતો – જે માણસ પક્ષપાતી હોય છે, એ પોતાના અસત્યને પણ સત્ય અને વિરોધી પક્ષના સત્યના પણ અસત્ય સિદ્ધ કરવામાં પ્રવૃત્ત રહે છે. એટલે એ સત્યમતને પ્રાપ્ત નથી થઈ સકતો. મનુષ્ય એજ છે કે જે અજ્ઞાન તથા પક્ષપાતથી દૂર રહીને વિવેકપૂર્ણ સત્યને ગ્રહણ કરે છે. સત્યનું ગ્રહણ અને આચરણ જ વ્યક્તિગત ધર્મનો સાર છે અને સામાજિક કર્તવ્યોનો આધાર પણ.

માનવતાનું બીજું લક્ષણ છે બીજાઓ સાથે યથાયોગ્ય વ્યવહાર. આજ સમસ્ત સામાજીક ધર્મનું મૂળ છે. સત્યાર્થપ્રકાશના પરિશિષ્ટ 'સ્વમન્તવ્યામન્તવ્યપ્રકાશ'માં કહ્યું છે "મનુષ્ય એને જ કહેવો જે મનનશીલ થઈને સ્વાત્મવત્ અન્યોના સુખ-દુખ અને હાનિ-લાભને સમજે." આ કથનમાં બધાં જ મનીષિઓ દ્વારા પ્રતિપાદિત સદ્‌વ્યવહારનો સાર આવી ગયો છે. વિચારકોએ જે આત્મન: પ્રતિકૂલાની પરેષાં ન સમાચરેત્ કહ્યું છે, એ આજ તો છે. ઉચિત વ્યવહાર શબ્દનું કથન જેટલું સુગમ છે, આચરણ એટલું નથી. જો વ્યક્તિ પોતાના સ્વાર્થ-ભાવ તથા દુરાગ્રહથી બહાર આવીને કાર્ય કરે તો પણ એના માર્ગમાં અનેકાનેક વિઘ્નો પડે છે. સમાજના કેટલાક શક્તિ અને પ્રભાવશાળી લોકો એને યોગ્ય વ્યવહાર કરવા દેતા નથી. તેઓ તો એને પ્રત્યેક સ્થિતિમાં પોતાનો જ અનુયાયી બનાવવાના પ્રયાસરત રહે છે. તેઓ એ પોતાનો અધિકાર માને છે કે સમાજનો દરેક એના સાચા કે ખોટાનું પૂર્ણ સમર્થન કરે. સત્યાર્થપ્રકાશની માનવતાને આ વાત અનુકૂળ નથી. ત્યાં તો કહ્યું છે – અન્યાયકારી બળવાનથી પણ ન ડરવું અને ધર્માત્મા નિર્બળથી પણ ડરતા રહેવું. સર્વથા ન્યાયનું અનુસરણ કરવું તલવારની ધાર પર ચાલવા જેવું છે. માનવજીવનની પણ કેટલીક મર્યાદાઓ છે, તેમ છતાં માનવતા એમાં જ છે કે સર્વસ્વ ગુમાવવું પડે, પ્રાણ પણ જતા રહે, પરંતુ સત્ય અને ન્યાયના માર્ગથી વિચલિત ન થવું. ઋષિની તીક્ષ્ણ દૃષ્ટિમાં જ્યાં સુધી સંભવ હોય, ત્યાં સુધી અન્યાયકારિઓની શક્તિને નુકસાન અને ન્યાયકારિઓની શક્તિની ઉન્નતિ માટે પ્રયાસ કરતા રહેવું. આ કામમાં ભલે ગમે તેટલા દારુણ દુ:ખ મળે, ભલે પ્રાણ જાય પરંતુ મનુષ્યપણાના ધર્મથી દૂર ન થવું.

સ્વાત્મવત્ અન્યોના સુખ-દુ:ખ અને હાનિ-લાભ સમજવા, આ કથનથી અનેક માનવીય મૂલ્યોની અભિવ્યક્તિ થાય છે. સત્યાર્થપ્રકાશમાં આને સત્ય પરીક્ષાની કસોટી પણ કહી છે. વસ્તુત: આ સામાજીક ધર્મનો મૂળ મંત્ર છે. અહિંસા, અસ્તેય અને અપરિગ્રહ જેવા સાર્વભૌમ ધર્મોનો આમાં સહજ જ અન્તર્ભાવ આવી જાય છે. સત્યાર્થપ્રકાશના ત્રીજા સમ્મુલ્લાસમાં બધાં યમ-નિયમોનું નિરુપણ કરવામાં આવ્યું છે. અહીં કહ્યું છે કે અહિંસાનો અર્થ છે વેરત્યાગ, મન-વચન કર્મથી ચોરીના ત્યાગને અસ્તેય કહે છે અને અપરિગ્રહનો અભિપ્રાય છે – અત્યન્ત લોલુપતા સ્વત્વાભિમાન રહિત હોવું. કોઈપણ માનવ માટે આવા નિયમોનું પાલન અનિવાર્ય છે ત્યારે જ સમાજ અને રાષ્ટ્રનો વ્યવહાર સુચારુ રૂપે ચાલી શકે. અહિંસા, અસ્તેય અને અપરિગ્રહ જેવા ભાવ અત્યન્ત વ્યાપક છે. એ અન્યોની સાથે આત્મવત્ વ્યવહારની વ્યાખ્યા કરે છે. શોષણ, તસ્કરી અને સંગ્રહની ભાવનાને દૂર કરાવે છે અને સમાજમાં સમતાની ભાવના જગાડે છે.

સ્માનવતાના ઉપર્યુક્ત વિશ્લેષણમાં વિવિધ માનવતાવાદી વિચારધારાઓનો સમાવેશ થઈ જાય છે. એનું મૂળ સૂત્ર વિવેક છે. એમાં આગ્રહ અને પક્ષપાતથી દૂર રહીને સત્યના ગ્રહણની પ્રેરણા છે, એટલે એમાં અન્ધવિશ્વાસ અને મિથ્યા-ધારણોનું સ્થાન નથી. વ્યક્તિગત ઉન્નતિની સાથે સાથે સામાજિક ઉન્નતિનું પણ ધ્યાન રખાયું છે. પ્રાણિમાત્ર પ્રત્યે આત્મવત્ વ્યવહારને સ્થાન આપ્યું છે. એટલે ઊંચ-નીચ, પોતાના-પરાયાનો ભેદ આમાં નથી. આ દૃષ્ટિકોણથી દૈનિક જીવનમાં નૈતિકતા આવે છે, આપત્તિગ્રસ્તોની સહાયતાની ભાવના જાગે છે અને સમાજ તથા રાષ્ટ્રનું કલ્યાણ અવશ્યમ્ભાવી છે. સમસ્ત સત્યાર્થપ્રકાશમાં માનવના વ્યક્તિગત તથા સામાજિક કર્તવ્યોની વિશદ વ્યાખ્યા છે. ઈશ્વર, જીવ, જગત, શિક્ષા-પદ્ધતિ, વર્ણાશ્રમ-ધર્મ, રાજધર્મ અને મોક્ષ આદિના વર્ણન દ્વારા માનવ-કર્તવ્યોનું જ વિશ્લેષણ કરાયું છે. છેલ્લા સમ્મુલ્લાસોમાં જે અન્યમતોની સમીક્ષા કરાઈ છે, એ પણ સત્યની શોધનો એકમાત્ર ઉપાય છે. સત્યાર્થપ્રકાશની અનુભૂમિકામાં કહ્યું છે – "મારું તાત્પર્ય કોઈને નુકસાન કે વિરોધ કરવાનું નથી, પરંતુ સત્યાસત્યનો નિર્ણય કરવા-કરાવવાનો છે..... મનુષ્ય જન્મ સત્યાસત્યનો નિર્ણય કરવા-કરાવવા માટે છે." એટલે કહેવું પડે છે કે સત્યાર્થપ્રકાશમાં માનવતાનું સર્વાંગીણ રૂપ પ્રસ્તુત કરવામાં આવ્યું છે. આવો સાચા અર્થોમાં આપણે માનવતાવાદને અપનાવીએ, ત્યારે જ માનવ જીવન સાર્થક થશે.

समाचार दर्पण

64वां वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्यसमाज आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ-गुजरात) का ''64वां वार्षिक अधिवेशन'' बड़े हर्षोल्लास से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। झंडा तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रात: बहन नन्दिता शास्त्री जी (पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी) के ब्रह्मत्व में ''आत्मकल्याण महा यज्ञ'' हुआ। यज्ञ के दौरान नन्दिता शास्त्री जी ने यज्ञ का महत्व समझाया व यज्ञ करने से जीवन में होने वाले आत्मिक लाभ के बारे में बताया। कार्यक्रम की शुरुआत 'आत्मकल्याण महायज्ञ' से हुई उसके तुरंत बाद ओम ध्वजारोहण हुआ जिसे अमेरिका निवासी श्री गिरीश खोसलाजी, श्री विश्रुतजी आर्य के करकमलों से फहराया गया। समारोह में पंचमहा यज्ञों की महिमा घर-घर में पहुँचानी है, परिवार को स्वर्ग बना सकते है? सुख शांति का मार्ग वैदिक जीवन शैली, आर्यसमाज एक रामबाण इलाज जैसे विविध सामाजिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित हुए। साध्वी उत्तमायतिजी (प्रधाना आर्य विरंगना दल), आचार्य जयेन्द्रजी (गुरुकुल नोएडा), स्वामी आर्य तपस्वी जी (दिल्ली), पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री जी (अहमदाबाद), आचार्या हान्हवी जी (हरिद्वार), श्री सिद्धार्थ भार्गव जी (आचार्यकुलम हरिद्वार), स्वामी शांता नन्दजी सरस्वती (कच्छ), आचार्या कृष्णा जी (रोहतक) स्वामी वेदपति जी (नखत्राणा) ने अपनी ओजस्वी वाणी से सभी को लाभान्वित किया। पं. दिनेश पथिक जी (अमृतसर) ने ईश भक्ति के सुमधुर भावपूर्ण भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया।

इस अवसर पर नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गयी-जिसमें गांधीधाम के गणमान्य महानुभाव, देश विदेश से सत्संग में पधारे श्रद्धालुजन बड़ी संख्या में शामिल हुए।

वैदिक मिशन का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 24-25 मार्च 2018 को स्वामी प्रणवानन्दजी (दिल्ली) की अध्यक्षता में आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में ''वेदों में शिक्षा विज्ञान'' विषय पर एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। जिसमें स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) एवं स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) विशेष अतिथि रहेंगे। इस संगोष्ठी में गुरुकुल एवं आचार्य तथा गुरुकुलों के प्रतिष्ठित स्नातक गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठविधि की महत्ता, इसमें उपस्थित बाधाएं, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन, आर्य समाज के लिए हितकारी या अहितकारी अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज वडोदरा के तत्त्वावधान में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न। श्री फत्तेसिंह आर्य अनाथाश्रम कारेलीबाग, वडोदरा के प्रांगण में तक आचार्य श्री विद्यादेवजी (गुरुकुल नोएडा) के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ हुआ।

प्रेरणा-दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैया लाल महता जी की पुण्यतिथि 'प्रेरणा-दिवस' के रूप में के.एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय में सम्पन्न की। यज्ञ हवन से प्रारंभ इस विशेष दिवस पर के.एल. मेहता दयानन्द विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने अपने प्रेरक महात्मा कन्हैया लाल महता जी के श्रद्धा भाव-सुमन के रूप में अनेक गीत प्रस्तुत किए, जिसने श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। मुख्य अतिथि आचार्य विजय पाल जी महाराज (गुरुकुल झज्जर) ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए महात्मा कन्हैया लाल मेहता जी को युगपुरुष और डॉ. विमल महता जी की इसकी युगधारा माना। प्रतिवर्ष होने वाली अन्तर्विद्यालय गायत्री एवं सन्ध्या-मन्त्र प्रतियोगिता में इस वर्ष प्रथम पुरस्कार के.एल. महता दयानन्द विद्यालय सेक्टर 17 एवं सेक्टर-7, द्वितीय पुरस्कार सेक्टर-16 विद्यालय एवं 3 जी विद्यालय, तृतीय पुरस्कार 2ई/27 विद्यालय तथा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार के.एल. महता दयानन्द पब्लिक सी.से. स्कूल नेहरू ग्राउण्ड ने प्राप्त किया। समारोह का समापन ऋषि लंगर से हुआ। संस्थान की अध्यक्षा डॉ. विमल महता ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों, शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा शिक्षण संस्थान के अन्य पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से इसकी गरिमा को बढ़ाया। उपाध्यक्ष आनन्द महता जी ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

मकर संक्रान्ति पर्व

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) में मकर संक्रान्ति पर्व बड़े धूम धाम से मनाया गया। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया यजमान श्री निश कुमार थे। इस अवसर पर आदित्य प्रकाश गुप्त प्रधान आर्य समाज ने कहा कि यह पर्व आदिकाल से मनाया जाता है। इस पर्व का महत्त्व हमारे सौर मण्डल और मकर राशि से है जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है उसे एक सौर वर्ष कहते है। पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का जो पथ है वह वर्तुलाकार होता है वर्तुलाकार पृथ्वी में बारह भाग अर्थात् बारह राशियां ज्योतिर्षियों द्वारा कल्पित की हुई है उनके बारह नाम है क्रान्ति वृत्त पर कल्पित प्रत्येक भाग व नक्षत्र पुजों की आकृति राशि कहलाती है पृथ्वी जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश सक्रमण करती है तो इस संक्रमण को संक्रमण कहते हैं लोकाचार में पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहते हैं सूर्य मकर राशि के दिन मकर राशि में प्रवेश करता है।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज खेड़ा अफगान

प्रधान- श्री आदित्य प्रकाश गुप्त **मन्त्री**- श्री राजेश कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री अमिल आर्य

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर

प्रधान- श्री देवेन्द्र देव वर्मा **मन्त्री**- श्री सिया राम

कोषाध्यक्ष- श्री सुबोध कुमार सिंह

21 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन

छोटा उदयपुर जिले के कवांट तालुका के छोड़वानी गांव में आयोजित धर्म सम्मेलन के प्रथम दिन प्रात: 8.00 से 11.00 तक आर्य समाज-वडोदरा द्वारा 21 कुण्डीय यज्ञ का सुन्दर आयोजन किया गया। सभी यजमान 21 जोड़ों को यज्ञोपवीत पहनाकर श्री अनुराग शास्त्री ने वेद मन्त्रों के माध्यम से वैदिक धर्म में दीक्षित किया। कार्यक्रम में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात के महामन्त्री श्री हसमूखभाई परमार एवं सौराष्ट्र सभा के प्रधान श्री रणजीतसिंह परमार की उपस्थिति से कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ा।

मकर संक्रान्ति पर्व आयोजित

आर्य समाज नेमदारगंज (नवादा) ने स्थापना के शताब्दी के नये सत्र में प्रवेश कर प्रथम आयोजन मकर संक्रान्ति पर्व के मधुर मिलन कार्यक्रम से नवादा जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री सत्यनारायण आर्य के पौरोहित्य में देवयज्ञ सम्पन्न कर नवनिर्मित भवन परिसर का शुभ उद्घाटन श्री आर.पी. साहू निदेशक-जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल नवादा, प्रो. कृष्णमुरारी साह सीताराम साहू कॉलेज नवादा, श्री मिथलेश कुमार सिंहा प्राचार्य-प्रोजेक्ट कन्या इन्टर विद्यालय हिसुआ, नवादा जिला-ग्राम पंचायत मुखिया संघ अध्यक्ष-श्री उदय यादव, पैक्स अध्यक्ष-श्री मनोज कुमार आनन्द के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

यजुर्वेद पारायण भजन यज्ञ सम्पन्न

जयपुर की पॉश कॉलोनी देवीनगर के भरत आश्रम प्रांगण में स्वाइन फ्लू निवारण यज्ञ समिति जयपुर आर्य समाज दक्षिण के तत्त्वाधान में यजुर्वेद पारायण भैषज यज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ के होता बाबूलाल आर्य ने अपने 75वें जन्म दिवस पर सपरिजन-कुटुम्ब के पूरे सत्र में आहुतियाँ लगाई। यज्ञ के ब्रह्माद्वय डॉ. कृष्ण पाल सिंह-डॉ. रामपाल के प्रवचन एवं श्रीमती श्रुति-कु. रचना आर्या के वेदपाठन ने प्रभावी-क्रम बनाए रखा। आयोजनों में उद्बोधन देने वालों में पं. भगवानसहाय विद्या वाचस्पति, डॉ. सुमित्रा आर्या एवं यशपाल यश प्रमुख विद्वान् रहे। मधुर-भक्ति गीतों की रसधार प्रवाहित होती रही श्रीमती श्रुति, दीपक शास्त्री, सुनील अरोड़ा, मोहन लाल लुहाना व श्रीमती मीनाक्षी के मुक्त कण्ठ से।

प्रवेश सूचना

गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर

(सम्पूर्ण नि:शुल्क शिक्षा, आवास एवं भोजन)

कक्षा-6वीं, 7वीं, 8वीं, 9वीं, 11वीं और बी.ए. प्रथम वर्ष के नवन छात्रों की प्रवेश परीक्षा 15 अप्रैल 2018 प्रात: 10 बजे गुरुकुल में आयोजित होगी। आवेदन पत्र भरकर 10 अप्रैल 2018 तक जमा करायें। आवेदन पत्र डाक द्वारा भी मंगाए जा सकते हैं। उत्तीर्ण छात्रों का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सम्पर्क:- गुरुकुल अधिष्ठाता-09888764311, 08544878541

सुख सपना, दु:ख बुलबुला,
दोनों हैं मेहमान,
उसको आदर दीजिए जो भेजे भगवान

प्रवेश सूचना

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर लुधियाना

(पंजाब) दूरभाष:-9179814629410

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना-सत्र 2018-2019

छठी कक्षा में (आयु+9 से-11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रूपए) भरकर 31.03.2018 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 01 अप्रैल 2018 दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी। ❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवम् स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। **-मोहन लाल कालडा, मैनेजर**

बलिदान दिवस सम्पन्न

स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का 29वां बलिदान दिवस पर दो दिवसीय वैदिक सत्संग कार्यक्रम में गायत्री महायज्ञ के यज्ञ ब्रह्म आचार्य बालेश्वर रहे। सम्पूर्ण समारोह की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि जी बहादुरगढ़ ने की। प्रथम दिन के कार्यक्रम के आयोजन श्री ओमप्रकाश यादव तथा यजमान कर्णसिंह व सरला, राहुल व सपना, अनिल व मनीषा रहें। अंतिम दिन के कार्यक्र के आयोजक पं. जयभगवान आर्थ तथा यजमान-देवेन्द्र, विवेक, कुनाल रहें। मुख्य वक्ता स्वामी आर्यवेश जी महाराज ने कहा कि हमें पाखण्ड मुक्त, नशा मुक्त, अन्याय मुक्त व बेटी युक्त समाज का निर्माण करना चाहिए ऐसी ही स्वामी शक्तिवेश जी महाराज चाहते थे। कार्यक्रम अध्यक्ष स्वामी धर्ममुनि जी ने कहा कि यह हर्ष की बात है कि आयोजकों ने उनके सुझाव के अनुसार स्वामी शक्तिवेश जी का जन्मदिवस उनके पैतृक ग्राम कलोई (झज्जर) में जन्माष्टमी पर्व पर मनाने का निर्णय लिया। कार्यक्रम में श्री पूर्णसिंह देशवाल प्रधान गुरुकुल झज्जर, मा. द्वारका प्रसाद प्रधान आर्य समाज झज्जर, पूर्व कॉलीज प्राचार्य, डॉ. एच. एस. यादव, डॉ. ध र्मवीर आर्य आदि गणमान्य महानुभावों ने वैदिक भक्ति संगीत (सम्पादित पं. रमेश चन्द्र वैदिक) पुस्तक का विमोचन किया। ऋषि लंगर प्रेषक की उत्तम व्यवस्था दोनो दिन की गई। मंच का संचालन सुभाष आर्य ने किया।

डी.ए.वी. में 51 कुण्डीय महायज्ञ आयोजित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सीनियर विंग पूण्डरी के प्रांगण में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 194वीं जयन्ती के अवसर पर 51 कुण्डीय विश्वशांति महायज्ञ आचार्य रवीन्द्र कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न किया गया। इस महायज्ञ के मुख्य यजमान स्कूल के प्रबंधक श्री जे.एस. नैन जी ने यज्ञ में आहूति डालकर विधिवत महायज्ञ सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशिका बहन अन्जली आर्या द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को भजनों के माध्यम से उपस्थित जन समूह को भाव-विभोर कर दिया तथा स्वामी जी के विचारों को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई। प्रत्येक हवन कुण्ड पर यजमान के रूप में बारहवीं के छात्रों तथा अध्यापकों, छात्रों के अभिभावकों व गणमान्य व्यक्तियों के द्वारा यज्ञ में आहूति अर्पित की गई।

पुस्तक समीक्षा

नाम पुस्तक : वैदिक भजन मनुहार,
(सजिल्द रंगीन आवरण)
संकलयिता : सुनील अरोड़ा
पृष्ठ संख्या : भजन-संकलित पृष्ठ 425
मूल्य : 250/- रूपये
प्रकाशक : श्री मुनीश नासा, प्रोपराइटर-मै. जे.के. एसोसिएट्स
प्रथम संस्करण, कार्तिक शु. 6, सं. 2074 वि.
(25 अक्टूबर सन् 2017) दयानंदाब्द 193
सम्पर्क सूत्र : सुनील अरोड़ा, 56/22, रजत पथ, मानसरोवर
जयपुर-302020, मो. 9799392970
E-mail:godsunsunil@yahoo.co.in

चर्चित पुस्तक ''वैदिक भजन मनुहार'' सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर सुनील अरोड़ा द्वारा वैदिक विचारों से ओत-प्रोत भजनों का संग्रह है। सुनील अरोड़ा वर्षो तक मानसरोवर आर्य समाज के मन्त्री रहे, अब स्वतन्त्र रूप से चित्रकूट पार्क में दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल का संचालन करते हैं। संग्रह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पं. प्रकाश ''कविरत्न'', पं. सत्यपाल ''पथिक'', नन्दलाल एवं 'बेमोल' आदि की रचनाएं सुव्यवस्थित क्रम से प्रस्तुत हैं। आर्य समाजों के सत्संग, वार्षिक उत्सव एवं पारिवारिक, मांगलिक आयोजनों एवं महत्वपूर्ण पद्धतियों, पर्वो व वैदिक संदर्भो में इन भजनों की पहुँच है। अत: पुस्तक उपयोगी एवं संग्रहणीय है। भजन संग्रह ''वैदिक भजन मनुहार'' की शुभाशंसा राष्ट्रस्तरीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य उपर्बुद्ध प्रदत्त तथा मंगलकामनाएँ डॉ. कृष्णपाल सिंह, डॉ. मुरारीलाल पारीक द्वारा की गई हैं। चर्चित पुस्तक का लोकार्पण दिनांक 26.11.2017 को राजस्थान लोकायुक्त मा. जस्टिस सज्जन सिंह कोठारी द्वारा महिला आर्य समाज मानसरोवर के वार्षिकोत्सव के दौरान हुआ। **- ईश्वर दयाल माथुर, सिद्धान्त भास्कर**

मुक्तक

- आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

वो जो बड़े-बड़े हादसों से गुजर जाते हैं,
वही छोटे फासलों से भी उवर पाते हैं।
हर सांस जो औरों पर कुर्बान करते हैं-
वही इतिहास के कागजों में संवर जाते हैं।।

अतीत स्वयं जवाब है उस पर सवाल नहीं होते,
मिट्टी की कोख में डूबे विना गुलाब नहीं होते।
चिरागों की तरह खुद को जलाना पड़ता है-
केवल मुठ्ठियां बान्ध लेने से इन्कलाब नहीं होते।।

डूबने का दर्द भला क्या जानें जो किनारे हैं,
अन्धेरों की टीस भला क्या जानें जो सितारे हैं।
आग के दरिया में डूबने का दर्द हमसे पूछो-
हमने उजड़े हुए विरान गुलशन संवारे हैं।।

अपनी हिम्मत को भगवान मान रखा है,
अपनी सच्चरित्रता को परवान रखा है।
हर कोई पीठ पर ही चोट करके गया-
हमने सदियों से सीना तान रखा है।।

- महादेव, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-175018

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से https://www.facebook.com/AjayTankarawala/ पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

टंकारा समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	: नई दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि	: मासिक
3. मुद्रक का नाम	: रामनाथ सहगल
4. क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5. मुद्रक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
6. प्रकाशक का नाम	: रामनाथ सहगल
7. क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8. प्रकाशक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
9. सम्पादक का नाम	: अजय सहगल
क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
सम्पादक का पता, उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.03.2018 **रामनाथ सहगल**, प्रकाशक

विक्रमी संवत् अपनाएं

❒ विमलेश बंसल "आर्या"

नवेली साल का आना बधाई हो-बधाई हो!
खुशी के गीत मिल गाना बधाई हो बधाई हो-बधाई हो!!
कमाई धर्म की करके जगत् खुशियों से भर दें हम!
गरीबों, दीन दुखियों और सभी के पेट भर दें हम!!
अतिथि विद्वान का आना बधाई हो बधाई हो-बधाई हो
मान से पान करवाना बधाई हो बधाई हो!!!
प्रेम भर-भर के बाँटें हम, खुशी का पार न भगवन!
सभी हँस मिलके बैठें हम खिले आर्यों का यह उपवन!!
खुशी के गीत मिल गाना बधाई हो बधाई हो-बधाई हो
साजो-संगीत हो जाना बधाई हो बधाई हो!!
ईर्ष्या द्वेष को छोड़ें, प्रेम कर मित्र बन जावें!
कँटीले कंट्कों से भी सुलझकर हम निकल जावें!
निडरता वीरता लाना बधाई हो बधाई हो-हो बधाई हो!
गम्भीरता धीरता लाना बधाई हो बधाई हो!!
पंच यज्ञों का पालन कर सभी हम श्रेष्ठ बन जावें!
ऋणों से हों उऋण तभी कर्म निष्काम बन जावें!!
सभी के काम मिल आना बधाई हो-हो बधाई हो!
यज्ञ घर-घर में करवाना बधाई हो बधाई हो!!
प्रभु की ज्योति से चमकें सभी को रोशनी देकर!
विकल्पों को हटा संकल्प सबके उर में भर-भर कर!
उरों का दीप बन जाना बधाई हो-हो बधाई हो!
दीप से दीप जल जाना बधाई हो बधाई हो!!
बजे स्वर ज्ञान की दुन्दुभी पताका ओम के नीचे!
कि वैदिक धर्म की जय हो बागवां मिलकर सब सीचें!!
प्रभु के गीत मिल गाना बधाई हो-बधाई हो!
'विमल' तन मन हो मुस्काना बधाई हो बधाई हो!!
विदेशी संस्कृति को तज स्वदेशी को ही अपनाएं!
जनवरी मन्थ को छोड़ें विक्रमी संवत् अपनाएं!!
चैत्र में साल नव आना बधाई हो-बधाई हो!
कोयलिया कुहुक कर गाना बधाई हो बधाई हो!!

-आर्य समाज, सन्त नगर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-65

नव सम्वत्सर

प्रतिपदा विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2075, 18 मार्च 2018
इस शुद्ध ईश्वरीय नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर हम आप व आपके परिवार के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

दुनिया में रोशन नाम टंकारा

ऋषिवर की जन्मभूमि यह तीर्थधाम टंकारा
है देता शान्ति का विश्व को पैगाम टंकारा
भटकती राहों में जीवन को लेता थाम टंकारा
दयानन्द से दुनिया में रोशन नाम टंकारा

टंकारा समाचार मार्च 2018
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-03-2018
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.02.2018

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय